DR. Manoj Kumar, Economics, YBN University, Ranchi

TEACHING MATERIAL ON

Economics

ब्याज की आधुनिक सिद्धांत

Q:- Explain the Modern theory of Interest?
ब्याज की आधुनिक सिद्धांत की व्याख्या करें।

OR

Discusse Hiks & Hansum theory of Interest?
हिक्स हैंसम की ब्याज सिद्धांत की व्याख्या करें।

OR

How Interest diffrent S.I-Carve and L-M Carve.

S-I वक्र एवं L-M वक्र के सहारे ब्याज दर के निर्धारण की व्याख्या करें।

Ans:- ब्याज की आधुनिक सिद्धांत का प्रतिपादन हिक्स हैंन्सम ने किया। इस सिद्धांत से पूर्व ब्याज दर के जितनी भी सिद्धांत थे वे सारे अनिर्धारणीय सिद्धांत थे तथा उन सिद्धांतों में आय के स्तर के विश्लेषण नहीं किया गया लेकिन, हिक्स हैंन्सम के द्वारा प्रतिपादित ब्याज दर का सिद्धांत निर्धारित सिद्धांत है तथा इसमें आय का स्तर का भी निर्धारण हो जाता है। यह सिद्धांत ब्याज दर के परम्परावादी सिद्धांत एवं केन्स के तरलता अधिमान सिद्धांतों दोनों पर आधारित है। हिक्स हैंन्सम ने ब्याज के प्रतिष्ठित सिद्धांत से S-I Carve तथा केन्स के तरलता अधिमान सिद्धांत से L-M Carve एक दूसरे को काटते हैं उसी बिन्दु पर ब्याज दर का निर्धारण होता है।

S-I-CARVE (Saving Investment Carve).

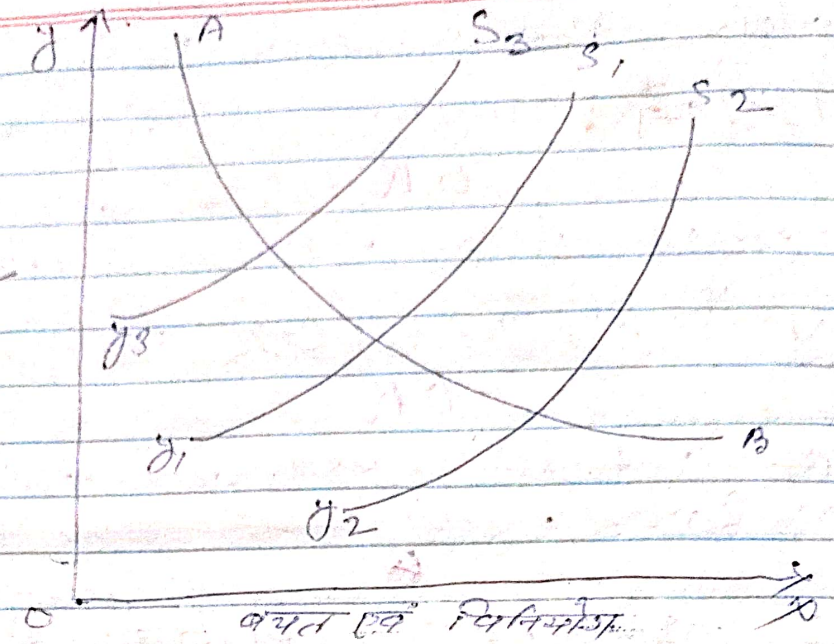

Graph: 1

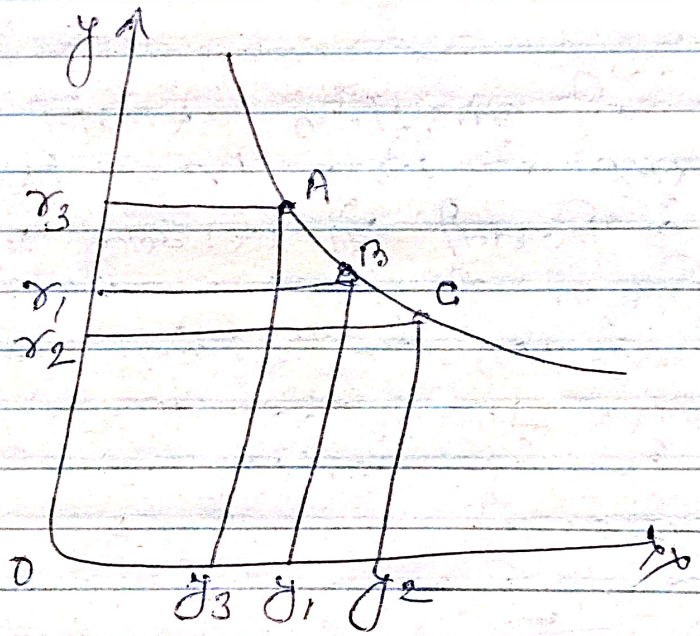

Graph: 2

fig: 1 में परम्परावादी सिद्धांत के अनुसार A.B. विनियोग का वक्र है जो ऊपर से नीचे दाहिनी ओर झुकता है यह बतलाता है कि ब्याज का दर एवं विनियोग के बीच विपरीत सम्बन्ध होता है जहाँ y_1S_1 बचत का वक्र है जो नीचे से ऊपर दाहिनी ओर बढ़ता है यह बतलाता है कि ब्याज की दर एवं बचत एवं विनियोग बराबर हो जाते हैं इसलिए O.r. ब्याज की दर निर्धारित होता है यह ब्याज की दर आय का स्तर y_1 पर है वसे fig: 2

में B बिन्दु से दिखाया गया है। अगर आय का स्तर y_1 से बढ़कर y_2 हो जाए तो बचत का वक्र $y_1 S_1$ से विस्थापित होकर $y_2 S_2$ हो जाता है, परिणाम स्वरूप ब्याज की दर r_1 से घटकर Or_2 हो जाता है जिसे चित्र: 2 में C बिन्दु से दिखलाया गया है। अगर आय का स्तर घटकर y_1 से y_3 हो जाता है तो बचत का वक्र $y_1 S_1$ बायीं ओर विस्थापित होकर $y_3 S_3$ हो जाता है। जिसे ब्याज की दर Or से बढ़कर Or_3 हो जाता है जिसे चित्र: 2 में A बिन्दु से दिखलाया गया है।

अतः स्पष्ट है कि आय एवं ब्याज की दर के बीच विपरित सम्बन्ध होता है इसलिए चित्र: 2 में S-I Curve A.B.C ऊपर से नीचे दाहिनी ओर झुकता है।

Imp

L-M. Curve (Liquid prefrence Supply of money curve)

(तरलता अभिमान - 95)

केन्स के अनुसार ब्याज की दर का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है जिस बिन्दु पर मुद्रा की पूर्ति मुद्रा की मांग अर्थात तरलता अभिमान (नगद पसंद) के बराबर हो जाता है।

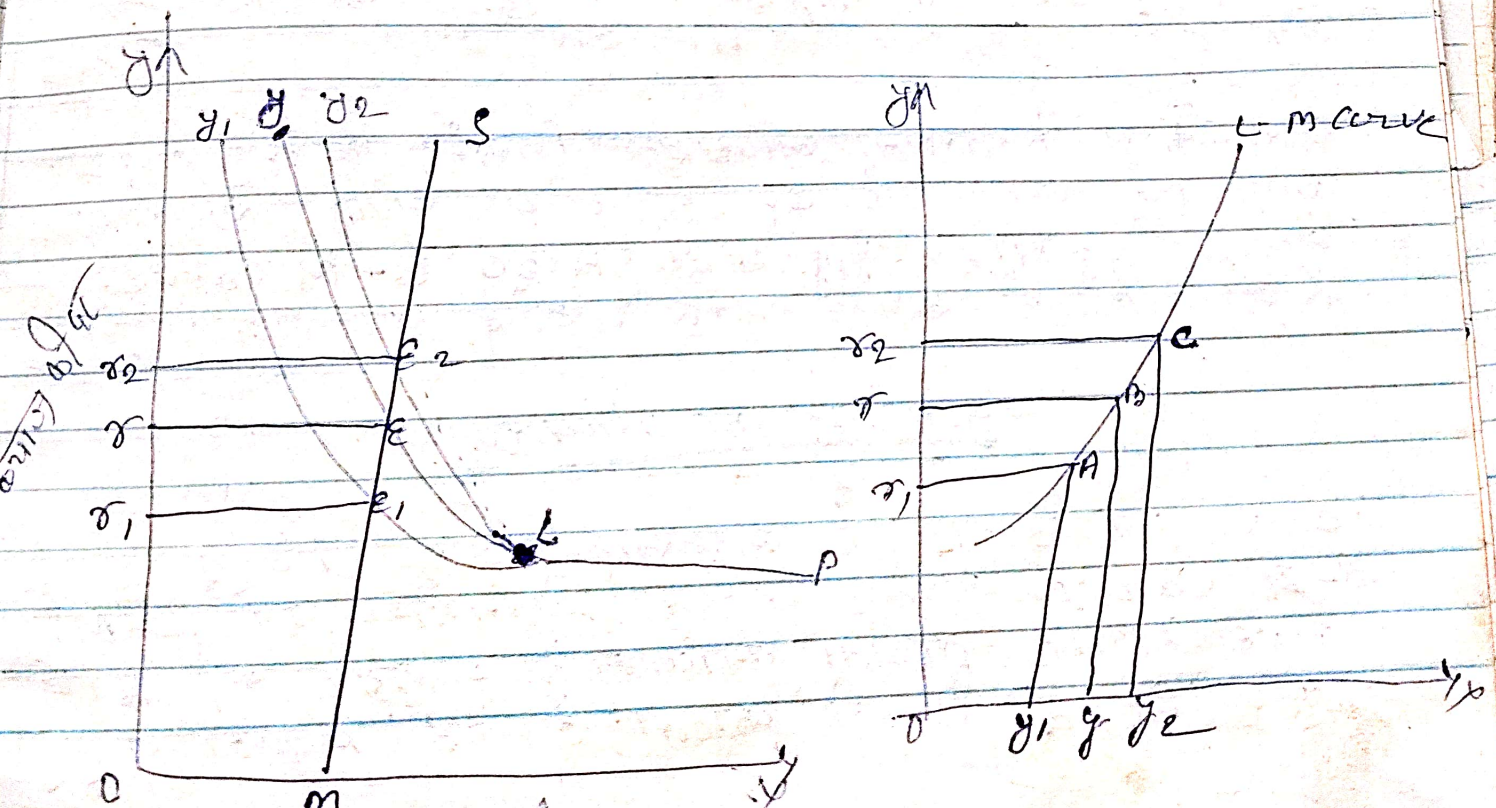

बचत एवं विनियोग
Graph: 3

Graph: 4

इस रेखाचित्र में yLP मुद्रा की माँग अर्थात् अधिमान का वक्र है जो ऊपर से नीचे दाहिनी ओर झुकता है एवं बतलाता है कि ब्याज की दर एवं तरलता अधिमान के बीच विपरीत सम्बन्ध होता है। यह दिए हुए आय के स्तर y पर तरलता अधिमान व्यक्त करता है। इसका LP भाग क्षैतिज है जो तरलता जाल को प्रदर्शित करता है, MS मुद्रा की पूर्ति की रेखा लम्बवत है जो बतलाती है कि दिए हुए समय बिन्दु में मुद्रा की पूर्ति OM स्थिर रहती है E बिन्दु में; पर तरलता अधिमान एवं मुद्रा की पूर्ति बराबर हो जाती है इसलिए Or ब्याज की दर निर्धारित हो जाता है, इसे Fig: 4 में B बिन्दु पर दिखाया गया है। अगर आय y से बढ़कर y2 हो जाए तो तरलता अधिमान yLP दाहिनी ओर विस्थापित होकर y2LP हो जाता है तथा ब्याज की दर Or से बढ़कर Or2 हो जाता है, इसे fig: 4 में दिखलाया गया है बिन्दु C पर। अगर आय का स्तर y से घटकर y1 हो जाए तो तरलता अधिमान वक्र विस्थापित होकर y1LP हो जाता है तथा ब्याज की दर Or से घटकर Or1 हो जाता है जिसे fig: 4 में बिन्दु A से दिखलाया गया है।

अतः केन्स के तरलता अधिमान सिद्धांत के अनुसार आय एवं ब्याज के दर के बीच सीधा सम्बन्ध होता है इसलिए fig: 4 में ABC L-M Curve है जो नीचे से ऊपर दाहिनी ओर बढ़ता है।

ब्याज दर का निर्धारण

हिक्स एवं हैन्सन के अनुसार जिस बिन्दु पर S-I Curve अर्थात् बचत विनियोग वक्र L-M Curve अर्थात् तरलता अधिमान ÷ मुद्रा की पूर्ति वक्र एक दूसरे को काटता है वहीं ब्याज दर

का निर्धारण होता है।

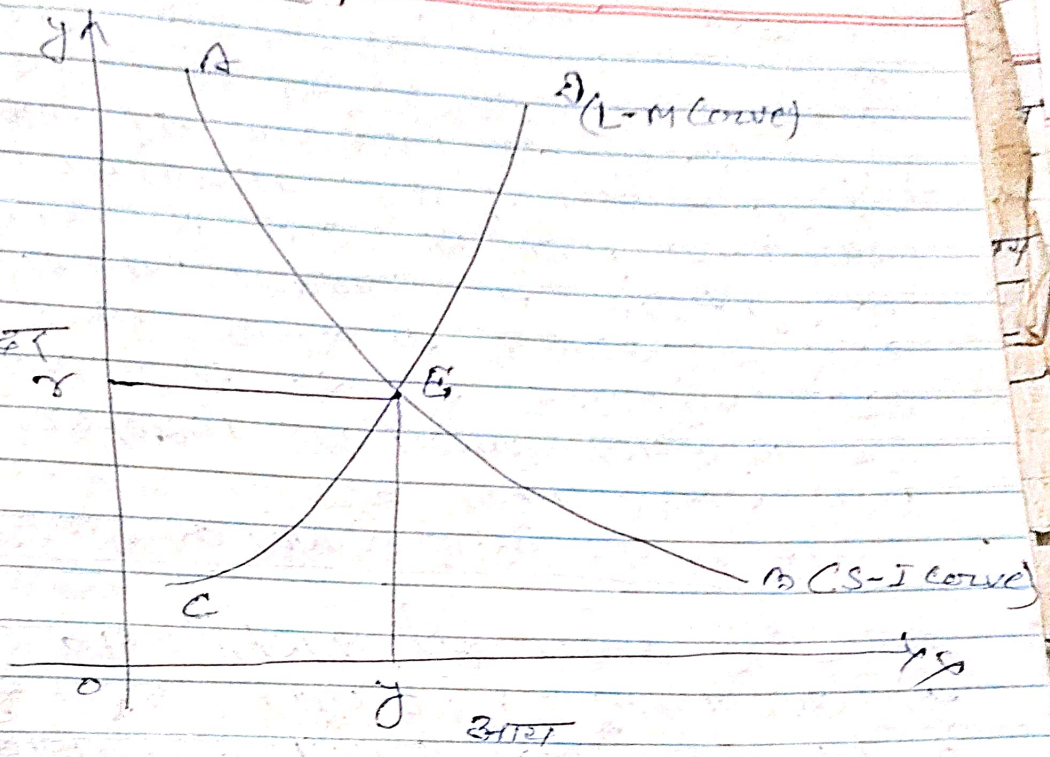

इस रेखाचित्र में AD वचत विनियोग वक्र है जो ऊपर से नीचे दाहिनी ओर झुकता है तथा बतलाता है कि आय एवं ब्याज के दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। CB वक्र तरलता अधिमान वक्र (L.M. Curve) जो मुद्रा की पूर्ति वक्र है जो नीचे से ऊपर दाहिनी ओर बढ़ता है और यह बतलाता है कि आय बढ़ने से ब्याज की दर में वृद्धि तथा आय घटने से ब्याज की दर में कमी होती है। किन्तु पर S-I एवं L-M. Curve एक दूसरे को काटते हैं इसलिए ब्याज की दर निर्धारित होता है तथा OY आय का स्तर भी निर्धारित होता है। इस सिद्धांत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अर्थव्यवस्था में ब्याज की दर के साथ-साथ आय के स्तर को भी निर्धारित करता है तथा यह ब्याज की दर का निर्धारणीय सिद्धांत है।

समाप्त